



फ़ैज़ाने

जुमादल ऊला व जुमादल उख्रा

सफ़्हात 17



- दुरुस्त नाम और सही ह तलफ़्फ़ुज़ 02
- साल भर तंगदस्ती से हिफ़ाज़त 05
- मोमिन का मौसिमे बहार 09
- नेक वज़ीर 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इलिया
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النَّبِيِّنَ ط
آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी रज़वी दाम्ते गायी

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ ये है :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَلُذْنُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاَكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
(स्टेट्रेट ज १४, دار الفکریروت)

नोट : अब्बल आखिर एक एक बार दुरुद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गमे मदीना
व बकीअ
व मार्फ़त
13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



नामे रिसाला : फैजाने जुमादल ऊला व जुमादल उखा

सिने तबाअत : रबीउल आखिर 1445 हि., अक्तूबर 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इलित्जा : किसी और को येर हिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

ये हरि साला “फैजाने जुमादल ऊला व जुमादल उछा”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएँ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीआए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़र्मा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ١ ص ١٣٨) (دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जे हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़र्माइये।

أَلْحَمْدُ لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

फैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख्ता⁽¹⁾

दुआए अन्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : “फैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख्ता” पढ़ या सुन ले उसे इस्लामी महीनों का अदब नसीब कर और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मगिफ़रत फ़रमा ।

امين بجاو خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم

दुरुद शरीफ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आखिरी नबी : مُسَلَّمٌ جَبَ تَكَ مُعْذَنْ پَر
दुरुद शरीफ पढ़ता रहता है, फ़िरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा ।

(ابن ماجہ، 1/490، حدیث: 907)

बैठते, उठते, जागते, सोते हो इलाही ! मेरा शिअर दुरुद

(जौके ना'त, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ﴿۲﴾ صَلَّى اللّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

“जुमादल ऊला” और “जुमादल उख्ता” नाम रखने की वजह

इस्लामी साल का पांचवां महीना “जुमादल ऊला” और छठा “जुमादल उख्ता” है। इस्लामी महीनों का तअल्लुक़ चूंकि चांद से है और गर्दिशे चांद के सबब इन महीनों में मौसिम बदलता रहता है। एक मौसिम किसी महीने में आता है तो अगले चन्द सालों में वोह मौसिम किसी और

①... येर हिसाला अल मदीनतुल इल्मय्या की किताब “इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल” से जुमादल ऊला और जुमादल उख्ता के महीनों की मुनासबत से तयार किया गया है।

(शो'बा हफ्तावार रिसाला मुतालअ़ा)

महीने में आ जाता है, इसी लिये मौसिम को इस्लामी महीनों के साथ खास नहीं कर सकते लेकिन जब इन महीनों के नाम रखे गए उस वक्त इस पांचवें और छठे महीने में इतनी सर्दी पड़ती थी कि पानी जम जाया करता था और जुमादा का मा'ना है “जम जाना” इसी मुनासबत से पांचवें महीने को “जुमादल ऊला” और छठे महीने को “जुमादल उख्ता” कहा जाने लगा।

(تفسیر ابن کثیر، التوبیہ، تحت الآیۃ: ۴، ۳۶)

दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़कुज़⁽¹⁾

लुगृत के ए'तिबार से इन दोनों महीनों के दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़कुज़ ये हैं : जुमादल ऊला, जुमादल उख्ता और जुमादल आखिरा।

जुमादल ऊला कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी आखिरत की बेहतरी के लिये पूरा साल ही फ़राइज़ों वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ली इबादात का भी एहतिमाम करना चाहिये क्यूं कि **अल्लाह** पाक अपने बन्दों के हर नेक अ़मल पर फ़ज़्लों करम की छमाछम बारिश बरसाता है, बिल खुसूस कुछ महीनों के मख़्सूस अव्याम और उन की रातों में उस के दरियाए रहमत की रवानी मज़ीद बढ़ जाती है, उस की रहमत को पाने और शौके

1... مَشْهُورٌ نَّحْوِي إِنَّمَا مُذَكَّرٌ لِأَجْمَعِيْنَ كُلُّ أَشْهُورٍ مُذَكَّرٌ لِأَجْمَعِيْنَ يُّؤْمِنُ بِهِ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُجْرِمُونَ

(13 صفحہ ۱۷۰۰)

जब लफ़ज़ “जुमादा” मुअन्नस है तो इस की सिफ़त भी मुअन्नस ही ज़िक्र की जाएगी इसी लिये “जुमादल अब्वल” और “जुमादल आखिर” न कहा जाए क्यूं कि “अल अब्वल” और “अल आखिर” मुज़क्कर हैं बल्कि “जुमादल ऊला” और “जुमादल उख्ता” कहना चाहिये। ऐसे ही छठे महीने को “जुमादस्सानी” भी न कहा जाए क्यूं कि सानी वहां आता है जहां उस के बा'द सालिस (तीसरा) भी हो, जब कि यहां तीसरा नहीं।



इबादत बढ़ाने के लिये उन में मख्सूस इबादात और अवरादो वज़ाइफ़ पर अंत्रो सवाब की बिशारतें दी गई हैं। जुमादल ऊला के महीने में भी शौके इबादत बढ़ाने और खूब खूब अंत्रो सवाब कमाने के लिये बुजुर्गने दीन के मा'मूलात और उन से मन्कूल इबादात और कुछ अवरादो वज़ाइफ़ यहां नक़्ल किये जा रहे हैं, अल्लाह करीम से दुआ है कि हमें इस माहे मुकर्म में अपनी रिज़ा व खुशनूदी के लिये खूब खूब इबादात करने की तौफ़ीक अ़ता फ़रमाए।

पहली रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है कि जुमादल ऊला की पहली तारीख़ को सहाबए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बीस रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे और हर रकअत में सूरए फ़तिहा के बा’द एक बार सूरए इख्लास ﴿فُلْ مُوَالِلَهُ أَحَدٌ﴾ पढ़ते। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा’द एक सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे।

(جواہر نسمہ، ص 21)

ख़लीफ़ए मुफ़ितये आ’ज़मे हिन्द, फैजे मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़ती मुहम्मद फैज़ अहमद उवैसी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक बे शुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता करेगा। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : पहली रात दो रकअत इस तरह अदा करे कि पहली रकअत में सूरए फ़तिहा के बा’द सूरए जुमुअह और दूसरी में सूरए मुज़ज़म्मिल पढ़े। (جواہر نسمہ، ص 21)

जो इस महीने की पहली रात और पहले दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में (सूरए फ़तिहा के बा’द) ग्यारह मरतबा सूरए इख्लास

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ पढ़े तो अल्लाह पाक 90 साल की इबादत उस के नामए आ'माल में लिखने का हुक्म देता है और 90 हज़ार साल की बुराइयां उस के नामए आ'माल से मिटा देता है। (جوہر غیبی، ص 618)

हज़रते अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद फैज़ अहमद उवैसी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि पहली तारीख को बा'द नमाज़े मग़रिब 8 रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़नी है, पहली और दूसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए इख़लास ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े। येह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है और इस के पढ़ने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مें बेशुमार इबादात का सवाब पाक परवर्दगार की तरफ से अ़त़ा किया जाएगा। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

तीसरी रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : तीसरी रात को बीस रकअत दस सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द दस दस बार सूरए कद्र पढ़े। नमाज़ के बा'द सुब्ह तक येह तस्बीह पढ़ता रहे : يَا عَظِيمُ تَعَظِّمْتُ بِعَظَمَتِكَ وَالْعَظَمَةُ فِي عَظَمَتِكَ يَا عَظِيمُ वाले ! तू अपनी बड़ाई के सबब अ़ज़मत वाला है और ऐ अ़ज़मत वाले ! हक़ीकी बड़ाई तेरी ही बड़ाई है।) (جوہر حمسہ، ص 21)

सत्ताईसवीं रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : इस माह की सत्ताईसवीं तारीख को 8 रकअतें दो सलाम से पढ़िये और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए बदुहा एक एक बार पढ़िये फिर येह तस्बीह पढ़िये : سُبُّوْمٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْبَلَائِيْةَ وَالرُّؤْوَحِ (तरजमा : पाक है, बे ऐब है फ़िरिश्तों और रूह का रब।) (جوہر حمسہ, ص 22-23, لائफ़ अश्रनी, 2/231)

जुमादल ऊला के रोज़े

हज़रते शाह कलीमुल्लाह शाह जहांआबादी رحمۃ اللہ علیہ فُرمाते हैं :
इस महीने की दूसरी, बारहवीं और इक्कीसवीं को रोज़ा रखने का बहुत सवाब है। (مرقع کلیسیں، ص 199۔ جواہر غیبی، ص 618)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ * * * صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जुमादल उख्ता कैसे गुजारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तमाम इस्लामी महीनों की तरह
जुमादल उख्बा भी बड़ी खेंगे बरकत का महीना है और इस माह की इबादत
बहुत अफ़्ज़ल है। येह महीना इस्तिक़बाले माहे रजब है गोया इस की इबादत
का मक़सद माहे रजब की हुर्मत है। इस माहे मुबारक के मुतअल्लिक बुजुर्गने
दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ सے مख्सूس इबादात व नवाफ़िल मन्कूल हैं जिन्हें अपना कर
अल्लाह पाक की रिज़ा व खुशनूदी और इस महीने की बरकतें हासिल की
जा सकती हैं।

जुमादल उख्ता के रोज़े

जुमादल उख़ा में रोज़ा रखने से मुतअ्लिलक़ हज़रते शाह कलीमुल्लाह
शाह जहांआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ف़رमाते हैं : इस महीने की पहली, पन्दरहवीं
और आखिरी तारीख़ को रोज़ा रखने का बहुत सवाब है । (مرق كليسي، م 199)

पहली रात के नवाफिल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : जुमादल उख़्ता की पहली रात दो रकअत नमाज़ पढ़े और सलाम के बाद खुब इस्तग़फ़ार करे । (جواہر خمسہ، 22 ج)

साल भर तंगदस्ती से हिफाज़त

जो शख्स बारह रकअतें छे सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूरए
फ़तिहा के बा'द सूरए कुरैश (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) पढ़े और नमाज़ से फ़াरिग़ हो कर

सूरए यूसुफ़ की तिलावत करे, अल्लाह करीम उसे तंगदस्ती और मुफिलसी से एक साल तक महफूज़ रखेगा । (جوہر خمسہ، ص 22)

फैज़े मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद फैज़ अहमद उवैसी महीने में जो शख्स चार रकअत नफ़्ल अदा करे और हर रकअत में (सूरए फ़तिहा के बा'द) सूरए इख़्लास ﴿قُلْ مُوَالِلُهُ أَحَدٌ﴾ तेरह (13) मरतबा पढ़े तो अल्लाह करीम उस के बे शुमार गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और उस के नामए आ'माल में बहुत सी नेकियां दाखिल फ़रमाता हैं ।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 67)

हुर्मतो अ़ज़मत की बिशारत

फैज़े मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद फैज़ अहमद उवैसी महीने फ़रमाते हैं : जो कोई जुमादल उख्ता की इक्कीसवीं रात से आखिरी तारीख तक हर रात बा'द नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़तिहा के बा'द सूरए इख़्लास ﴿قُلْ مُوَالِلُهُ أَحَدٌ﴾ एक एक बार पढ़े, अल्लाह पाक उस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुर्मतो अ़ज़मत बख्शता है । (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : इक्कीसवीं रात से आखिरी तारीख तक कई सहाबए किराम ﷺ हर रात बीस रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे ।

(جوہر خمسہ، ص 22)

आखिरी अशरे के आ'माल

कई सहाबए किराम ﷺ इस महीने के आखिरी अशरे में इस्तिक्बाले रजबुल मुरज्जब के लिये रोज़े रखा करते थे । (جوہر خمسہ، ص 22)

फैजे मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ्ती फैज़ अहमद उवैसी رحمة الله عليه محدث
फ़रमाते हैं : जुमादल उख्ता की आखिरी तारीख को रोज़ा रखना रजब शरीफ
के इस्तिक्बाल के लिये मुस्तहसन है ।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी رحمة الله عليه (वफ़ात : 597
हि.) फ़रमाते हैं : इन्सान को चाहिये कि रजब शरीफ की आमद से पहले
इस्तिक्बाले रजब के लिये खुद को गुनाहों से पाक साफ़ करे, अपनी हर ख़ता
अपने हर गुनाह पर नादिमो शरमिन्दा हो कर अल्लाह पाक की बारगाह में
तौबा करे और तौबा के ज़रीए अपने दिल को गुनाहों की गन्दगी से पाक कर
ले ।

(النوراني فضائل الأيام والشهر، ص 129)

صلوا على الحبيب ﷺ صلوا الله على محمد

जुमादल ऊला और उख्ता की मुतफ़रिक इबादात

बा'ज़ नेकियां ऐसी हैं कि जिन के ज़रीए हर माह अज्ञो सवाब
कमाया जा सकता है । फ़राइज़ की पाबन्दी के साथ साथ जुमादल ऊला और
जुमादल उख्ता में इन नेकियों का भी एहतिमाम कीजिये और अल्लाह पाक
की ख़ूब रहमतें और बरकतें हासिल कीजिये ।

रोज़े के लिये महीने के अफ़ज़ल अव्याम

हज़रते इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه महीने के अफ़ज़ल दिनों के बारे
में फ़रमाते हैं : महीने का पहला, दरमियानी और आखिरी दिन और
दरमियान में अव्यामे बीज़ या'नी चांद की तेरह, चौदह और पन्दरह
तारीख । येह फ़ज़ीलत वाले अव्याम हैं, इन में रोज़े रखना और ब कसरत
ख़ैरात करना मुस्तहब है ताकि इन अवक़ात की बरकत से इस का अज्ञ
दुगना (डबल) हो ।

(احياء العلوم، 1، 318)

हज़रते अबू ज़रِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! जब तुम हर महीने तीन रोज़े
रखो तो तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं के रखो । (ترمذی، حدیث: 193/2)

हज़रते अबू उस्मान नहदी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं सात रोज़े तक
हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ का मेहमान रहा । मैं ने पूछा : “ऐ अबू हुरैरा
रَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ! आप किस तरह रोज़े रखते हैं या आप के रोज़े कैसे होते हैं ?”
फ़रमाया : “मैं हर महीने के आगाज़ में तीन रोज़े रखता हूं और अगर कोई
आरिज़ा पेश आ जाता है तो महीने के आखिर में तीन रोज़े रख लेता हूं ।”

(مسند احمد، حدیث: 8641، 268/3)

महीने भर का सवाब

आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद
रज़ा ख़ान की बारगाह में अर्ज़ की गई : “अच्यामे बीज़ में रोज़ा
रखने से महीने भर का सवाब मिलता है ?” इर्शाद फ़रमाया : “हां ! पहली,
दूसरी, तीसरी या तेरह, चौदह, पन्द्रह या सत्ताईस, अठ्ठाईस, उन्तीस इन में से
जिस में रोज़ा रखे सब का सवाब बराबर है ।” (मल्फूज़ते आ’ला हज़रत, स. 419)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ हमें अच्यामे
बीज़ के तीन रोज़े रखने का हुक्म दिया करते और फ़रमाया करते : ये हर एक
महीने के रोज़ों के बराबर हैं । (نسائی، حدیث: 397)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे नबी نَبِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ ने
हर महीने के अच्यामे बीज़ में रोज़े रखने की तरगीब इर्शाद फ़रमाई है और
बुजुर्गने दीन ने हर महीने रोज़ों के लिये अफ़ज़ल अच्याम बयान फ़रमाए हैं
इस लिये हमें चाहिये कि इन महीनों में भी रोज़े रखें ताकि ख़ूब रह़मतें और
बरकतें हासिल हों ।

मोमिन का मौसिमे बहार

शुरूअ़ में बताया गया है कि जब महीनों के नाम रखे गए तो उस दैरान पांचवें और छठे क़मरी महीने में बहुत ज़ियादा सर्दी हुवा करती थी जिस की वज्ह से पांचवें का नाम जुमादल ऊला और छठे महीने का नाम जुमादल उख्ला रखा गया। इसी मुनासबत से यहां सर्दियों में की जाने वाली नेकियों के हवाले से बुजुगने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के चन्द अक़वाल और उन के वाक़िआत नक़ल किये जा रहे हैं।

रोज़ा रखिये और क़ियाम कीजिये

सर्दी हो या गर्मी ! हर मौसिम इबादत का मौसिम है लेकिन सर्दियों में कम वक़्त में ज़ियादा सवाब कमाना निस्बतन आसान है क्यूं कि सर्दियों के दिन छोटे होते हैं, रातें लम्बी और मौसिम ठन्डा रहता है। जैसा कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इशार्द फ़रमाया : مौसिमे सरमा मोमिन के लिये बहार का मौसिम है कि इस में दिन छोटे होते हैं तो मोमिन उन में रोज़ा रखता है और उस की रातें लम्बी होती हैं तो वोह उन में क़ियाम करता (यानी नफ़्ल पढ़ता) है।

(شعب الایمان، 3/416، حدیث: 3940)

सर्दी बन्दए मोमिन के लिये बहार का मौसिम इस लिये है कि वोह इस मौसिम में फ़रमां बरदारियों के बाग़ात में चरता है और इबादतों के मैदानों में टहलता है नीज़ सर्दी में आसानी से अदा हो जाने वाले नेक आ'माल की क्यारियों में दिलो जान को ताज़ा करता है। जैसे मौसिमे बहार में चरागाह में जानवर चरते हैं और ख़ूब तन्दुरुस्त और फ़रबा हो जाते हैं यूंही मौसिमे सरमा में अल्लाह पाक ने अपनी इबादतों की जो आसानियां अ़त़ा फ़रमाई हैं उन की बरकत से बन्दए मोमिन का दीनो ईमान भी फ़रबा हो जाता

है क्यूं कि जब सर्दी का मौसिम आता है तो बन्दए मोमिन भूक और प्यास की मशक्कूत उठाए बिगैर ही दिन में रोज़ा रख सकता है कि दिन छोटा और सर्द होता है लिहाज़ा रोज़े की तकलीफ महसूस नहीं होती । (طائف العارف، ص 372)

ठन्डी ग़नीमत

प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा نَبِيُّ اللَّهِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद ف़रमाया : “सर्दी के रोज़े ठन्डी ग़नीमत हैं ।” (ترمذی، حدیث: 210)

इस की शर्ह में है : सर्दी के रोज़ों को ठन्डी ग़नीमत फ़रमाने की ये हवज़ है कि ये ह ऐसा माले ग़नीमत है जो किसी लड़ाई, थकावट या मशक्कूत के बिगैर ही हाथ आ जाता है इसी लिये मुजाहिद इस ग़नीमत को आसानी से समेट लेता है । (طائف العارف، ص 372)

इबादत में इज़ाफ़े का मौसिम

हमारे बुजुर्गने दीन رحمةُ اللهُ عَلَيْهِ مौसिमे सरमा की आमद पर खुश होते और इसे इबादत में इज़ाफ़े का मौसिम क़रार देते, जैसा कि हज़रते اُब्दुल्लाह बिन मस्�ज़ूद رحمةُ اللهُ عَلَيْهِ مौसिमे सरमा की आमद पर फ़रमाते : सर्दी को खुश आमदीद, इस में अल्लाह पाक की रहमतें नाज़िल होती हैं कि शब बेदारी करने वाले के लिये इस की रातें लम्बी और रोज़ादार के लिये दिन छोटा होता है । (من الدرر الفاروق، حدیث: 4/164)

इस फ़रमान की शर्ह में है : सर्दी की रातें लम्बी होती हैं लिहाज़ा ये ह मुम्किन होता है कि रात के एक हिस्से में आराम कर लिया जाए और फिर एक हिस्सा अल्लाह पाक की इबादत में गुज़ारा जाए । यूं बन्दए मोमिन नमाज़ पढ़ लेता है, कुरआने पाक का मछूस हिस्सा तिलावत कर लेता है और जिस्म को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ नींद भी मिल जाती है इस तरह

सर्दियों की रातों में मुसल्मान अपना दीनी फ़ाएदा भी हासिल कर लेता है और उस के जिस्म को राहत भी मिल जाती है। (طائف المعارف، ص 372)

सर्दियों में इबादत के मुतअल्लिक बुजुर्गने दीन के अक़वाल

अल्लाह पाक के नेक बन्दे सर्दियों के अच्याम में इबादत को मह़बूब जानते थे।

हज़रते यहूया बिन मआज़ राज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : रात लम्बी है, उसे नींद से छोटा न करो और दिन पाकीज़ा है उसे गुनाहों से आलूदा न करो। (صفة الصفة، ص 47)

हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : सर्दी बन्दए मोमिन का कितना अच्छा ज़माना है ! रात लम्बी होती है, बन्दा रात में नमाज़ के लिये क़ियाम करता है और दिन छोटा होता है तो बन्दा रोज़ा रख लेता है।

(طائف المعارف، ص 373)

जब सर्दी का मौसिम आता तो हज़रते उँबैद बिन उमैर رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ف़रमाते : ऐ कुरआन वालो ! तुम्हारे कुरआन पढ़ने के लिये रात लम्बी हो गई है लिहाज़ा क़ियाम में ख़ूब तिलावत करो और तुम्हारे रोज़े के लिये दिन छोटा हो गया है लिहाज़ा रोज़े रखो। (احادیث الشفاء، ص 98)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सर्दी की वजह से इबादत में सुस्ती मत कीजिये बल्कि सर्दी की मशक़्क़त पर सब्र कर के اَفْضُلُ الْعَمَالِ اَحْسُنُهَا“ या’नी अफ़ज़ूल तरीन अ़मल वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा हो ।” (تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: 1، 34: 431) पर अ़मल कीजिये और उन बुजुर्गने दीन को याद कीजिये जो सख़्त सर्दियों में सारी रात अल्लाह करीम की इबादत में गुज़ार देते, नींद को दूर करने के लिये ठन्डे पानी से बुजू फ़रमाते। चुनान्चे

सर्दियों में बुजुर्गाने दीन की इबादत की हिकायात

(1) हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سَلَامٌ وَسَلَوةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سَلَامٌ ने सर्दियों में छत पर और गर्मियों में घर के अन्दर नमाज़ पढ़ते और सुब्हः तक सर्दी व गर्मी की वज्ह से बेदार रहते और बारगाहे इलाही में अर्ज़ गुज़ार होते : ऐ अल्लाह पाक ! ये ह सफ़्वान की तरफ़ से कोशिश है और तू ज़ियादा जानता है । (حلية الاولى، 3/186، رقم: 3645)

(2) हज़रते सफ़्वान और दीगर बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ سَلَامٌ सर्दी की रातों में एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते थे ताकि सर्दी से नींद भागती रहे । कुछ बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ سَلَامٌ को इबादत में नींद आने लगती तो पानी में ग़ोता लगा लेते और फ़रमाते : ये ह पानी (दोज़खियों के) पीप के पानी से हलका है । (طائف العارف، ص 375)

फ़िक्रे आखिरत का एक अन्दाज़

(3) हज़रते जुबैद यामी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سَلَامٌ एक रात तहज्जुद के लिये उठे, बुजू के लोटे में हाथ डाला तो पानी बहुत ठन्डा था और सर्दी की शिद्दत से जमने के क़रीब था । ठन्डक महसूस हुई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سَلَامٌ को जहन्म की ज़म्हरीर⁽¹⁾ याद आ गई, सारी रात यूंही गुज़र गई और सुब्हः तक आप ने लोटे से हाथ न निकाला । सुब्हः आप की कनीज़ आई तो आप इसी कैफ़ियत में थे, कनीज़ बोली : जनाबे वाला ! आप को क्या हो गया है ? आप ने मा'मूल के मुताबिक़ गुज़श्ता रात नमाज़े तहज्जुद भी नहीं पढ़ी और यहां वैसे ही बैठे हुए हैं । हज़रते जुबैद यामी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سَلَامٌ ने फ़रमाया : अल्लाह पाक तुम पर रहम फ़रमाए, हुवा ये ह कि मैं ने लोटे में हाथ डाला तो पानी की ठन्डक से

1 ... ج़म्हरीर शदीद क़िस्म की ठन्डक है जो कुफ़्कार को अ़ज़ाब देने के लिये तथ्यार की गई है । (الباهري في غريب الاشراف، 2/283) ये ह अपनी ठन्डक से यूं जलाती है जैसे आग अपनी गरमी से जलाती है ।

(تفسير غازان، سورہ مُ، حجت الآیۃ: 47، 57)

तकलीफ हुई फिर मुझे ज़म्हरीर याद आ गई, खुदा की क़सम ! तुम्हारे यहां आने तक भी मुझे इस पानी की ठन्डक महसूस न हुई । (صفة الصفة، 3/64)

﴿4﴾ हज़रते दावूद बिन रुशेद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرِمَّا تَرَكَ سَرْدَ رَأْتَ مِنْ نَمَاجِّ كَيْ خَاتِرِ وَعْذُوْ كَرَنَے उठा, पानी बहुत ठन्डा महसूस हुवा, वोह रोने लगा, इतने में एक पुकार सुनाई दी : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं ? कि हम ने लोगों को सुला दिया और तुम्हें उठाया, तुम यूं रोना रो रहे हो !

(طائف المعارف، ص 374)

﴿5﴾ हज़रते अबू سुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرِمَّا तَرَكَ सर्दी में एक सर्द रात मेहराब में था । सर्दी ने बहुत परेशान कर दिया, मैं ने सर्दी के मारे एक हाथ छुपा लिया और दूसरा हाथ फैला रहा । इतने में मेरी आंख लग गई, कोई कहने वाला कह रहा था : ऐ अबू सुलैमान ! एक हाथ में हम ने रख दिया जो रखना था, अगर दूसरा हाथ भी होता तो उस में भी ज़रूर रखते । हज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرِمَّا तَرَكَ इस के बाद मैं ने खुद से अ़हद कर लिया कि गर्मी हो या सर्दी हमेशा दोनों हाथ फैला कर ही दुआ करूंगा ।

(حلیۃ الاولیاء، 9، رقم: 272)

जिन के लिये सर्दी गर्मी बराबर थी

बा'ज़ बुजुर्गने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के लिये सर्दी और गर्मी बराबर होती थी । जैसा कि महबूबे परवर्दगार صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते मौला अ़ली शेरे खुदा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के लिये दुआ की, कि अल्लाह पाक उन से गर्मी और सर्दी दूर फ़रमा दे । चुनान्वे हज़रत मौलाए काएनात अ़लियुल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ सर्दी में मौसिमे गरमा के (बारीक) कपड़े ज़ेबे तन फ़रमाते और गर्मी में मौसिमे सरमा के (मोटे) कपड़ों को नवाज़ते । (حلیۃ الاولیاء، 9، رقم: 272)

एक ताबेई बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को सर्दी में पानी से त़हारत हासिल करने में बहुत तकलीफ होती थी, उन्होंने बारगाहे इलाही में दुआ की चुनान्वे (उन की दुआ मक्कूल हुई और) सर्दी के मौसिम में उन के पास पानी आता तो गर्म होने के सबब उस में भाप होती । (حلیۃ الالویاء، ۹/۲۷۲، رمذان ۱۳۸۷)

हज़रते अबू سुलैमान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने सफ़ेरे हज़ के दौरान एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को देखा कि सख़्त सर्दी में बोसीदा कपड़े पहने हुए हैं और पसीने में शराबोर हैं । हज़रते अबू سुलैमान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को हैरत हुई, आप ने बुजुर्ग से हाल पूछा, उन्होंने ने फ़रमाया : गर्मी और सर्दी तो अल्लाह पाक की दो मख़्लूकात हैं, अल्लाह पाक हुक्म फ़रमाए कि सर्दी गर्मी मुझ पर छा जाएं तो मुझे सर्दी व गर्मी लग के रहें और अगर वोह रब्बे करीम हुक्म फ़रमाए तो सर्दी व गर्मी मेरे क़रीब भी न आएं । उन बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मज़ीद फ़रमाया : मैं तीस साल से इस जंगल में हूँ, अल्लाह पाक मुझे सर्दी में अपनी महब्बत की गर्माइश अ़त़ा फ़रमाता है और गर्मी में अपनी महब्बत की ठन्डक बख़्शता है । (طائف المعرف، ص ۳۷۶)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सर्दी के मौसिम में बहुत से लोग अपनी गुर्बत की वज्ह से घर वालों और बाल बच्चों के लिये सर्दी से बचाव के गर्म लिबास वगैरा ख़रीदने की ताक़त नहीं रखते, ऐसे में अगर हम उन की मदद कर दें तो इस में हमारे लिये अओ सवाब है । “लताइफुल मआरिफ़” में है कि सर्दी के मौसिम में ग़रीबों पर सर्दी दूर करने वाली चीज़ें ईसार करना बहुत फ़ज़ीलत वाला अ़मल है । (طائف المعرف، ص ۳۷۶)

एक क़मीस के बदले जन्त में दाखिला

हज़रते सुलैमान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का बयान है कि अहले शाम में से एक शख्स ने आ कर कहा : मुझे हज़रते सफ़वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

के बारे में बताओ, मैं ने उन्हें जन्नत में दाखिल होते देखा है। पूछा गया : किस अँमल के सबब ? उस ने बताया : किसी को एक क़मीस पहनाने के सबब। हज़रते सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ سे किसी ने उस क़मीस का तज्जिकरा किया तो आप ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं सख्त सर्दी की रात में मस्जिद से निकला तो एक बरहना (बे लिबास) शख्स पर नज़र पड़ी, मैं ने अपनी क़मीस उतार कर उसे पहना दी।

(طائف المعارف، ص 376)

नेक वज़ीर

एक नेक वज़ीर को बताया गया कि एक औरत के चार यतीम बच्चे नंगे भूके हैं, वज़ीर ने एक आदमी को हुक्म दिया कि फौरन जाओ और उन की ज़रूरत के कपड़े और खाना वगैरा उन्हें पहुंचाओ। फिर वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास उतार दिया और क़सम खाई कि बखुदा ! मैं तब तक लिबास न पहनूंगा और न ही कोई गर्माइश लूंगा, जब तक येह आदमी मुझे वापस आ कर बता न दे कि उन यतीमों को लिबास पहना दिये हैं और उन का पेट भर दिया है, चुनान्चे वोह आदमी चला गया और जब वापस आ कर बताया कि यतीमों ने कपड़े पहन लिये हैं और खाने से सैर हो गए हैं, तब नेक वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास दोबारा पहन लिया, नेक वज़ीर उस वक्त सर्दी से कांप रहा था।

(طائف المعارف، ص 378)

अल्लाह पाक हमें भी ग़रीबों, यतीमों की ज़रूरिय्यात का ख़्याल रखने और उन के साथ हुस्ने सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और माहे जुमादल ऊला और जुमादल उख्ता में मौसिम जैसा भी हो ख़ूब ख़ूब इबादतें करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُوٰ اٰلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले हफ्ते का रिसाला

103 Sunnat Aur Aadab (Hindi) सुनारा रिसाला : 300
ब्रॉडी बुक्स : 200

अपनी आगे सुनते और आदाब की किताब
“650 सुनते और आदाब” की एक किताब

103 सुनते और आदाब

सुनारा रिसाला : 200

सुनारा की 22 सुनते और आदाब 8
विवाह प्रौढ़ों की 13 सुनते और आदाब 9
प्रश्नों के बीच में 15 सुनते और आदाब 10
विवाह प्रौढ़ों की 20 सुनते और आदाब 11
विवाह प्रौढ़ों की 20 सुनते और आदाब 12
विवाह प्रौढ़ों की 20 सुनते और आदाब 13
विवाह प्रौढ़ों की 20 सुनते और आदाब 14

मुहम्मद इन्द्राम अन्तार कादिरी रज़वी प्रौढ़ों की 20 सुनते और आदाब